2,35,19. स्रभीट्सत्ती M. 5,156. med: क्र्रभीट्सत्त प्रनामयम्ब तथाम् MBB. स्त्रभीट्सत्त प्रनामयम्ब तथाम् MBB. स्त्रभीट्सत्त प्रवासकामस्य (der seine Begterden abgeschlossen क्राप्टिसत्त gewünscht, erwünscht, genehm, lieb AK. 3,2,3.61. म- तसा यद्भीट्सितम् VIÇV. 15,11. स्रादानम् — दानं च — स्रभीटिसतानामर्था- व्यासकलः RAGB. 6,44. प्रयासकले स्त्रमाणि प्रयासानि वरुत्ति च MBB. 15,

— श्रव 1) erreichen, betreten: नैतां सङ्का वित्तमयीमवाप्ता (mitact. Bed.) यस्या मङ्जात बक्वा मनुष्या: Клтвор.2,3. तूर्ण पार्मवाप्रवन् МВн.1,5875. मर्को भ्रमती क्मिवत्पार्मूलमवापतुः KATHAS. 1,27. auf Jmd stossen, Jmd antressen: अमन्नवाप तत्रांसा बाङ्गयुद्धैकतत्परा। पुरुषा द्वा Kathis. 3, 46. - 2) erlangen, empfangen, sich zu Eigen machen, gewinnen, erleiden, sich zuziehen: लोकाववाप्रोतीमं चाम्ं च KHAND. Up. 8, 8, 4. देवलोकम् Yıçv. 7,19. यानि राजप्रदेयानि प्रत्यक् ग्रामवाप्तिभिः । म्रव्नपानेन्धनादीनि ग्रामिकस्तान्यवाप्यात् ॥ M. 7, 118. दायम् 9, 217. फलम् 2, 160. 5, 54. 7, 207 (मित्राद्याप्यमित्राद्या). 8, 156. R. 3, 35, 16. राज्यम् 1, 1, 86. दीतिम् 7, 18. वृह्मि 3, 4, 18. कामम् 1,1,38. Viçv. 8,17. MBH. 2,989. दीर्घमायुः M. 4,76.94. सुखम् 2,9. 6,80. कोर्तिम् 2,9. भ्रेय: MBH. 2,2590. प्रीतिम् 1, 7714. राजसूयम् 2,627. सिडिम् Vicv. 12,20. जयम् N. 14,19. परा मुद्रम् 19,29. दिव्यं भागम् VID. 153. मुतम् — म्राप्न्हि Çik. 82. या — पुत्रं देव-राह्मप्यापुयात् M.9,147. म्रवाप्सीमेव्हिषों भाज्या रूपो निर्जित्य हिक्मणम् МВн. 3, 490. तमवाप्य सत्पतिम् Ragh. 3, 33. ब्रह्म (die heilige Schrift) य-स्त्रननुज्ञातमधीयानाद्वाष्ट्रयात् M.2,116. नृत्यं गीतं च — चित्रसेनाद्वाष्ट्रिक् МВн. 3, 1763. तस्मादवाप्स्पयः — क्तस्रा विद्याम् Катная. 2, 46. धर्मम्वा-मुंकि R. 5,37,13. निन्दाम् M. 5,161. देशवम् 12,69. नैनः किंचित् 9,91. म्-त्युम् Рамкат. 106, ३. सिंहाद्वापद्विपदम् Ragn. 18,३४. — med.: परा गतिम-वामुतं MBH. 14,597. — pass.: म्रत्त्पं वा बङ्क वा प्रेत्य दानस्यावाप्यते पा-लम् M. ७,४६. ४१६४. ८,४४. यज्ञैर्नावाप्यते स्वर्गः R. १,४७,६. म्रवापि — तोषः पर्ग वासवर्त्तपातः Катная. 12, 195. पैत्कं त् पिता इट्यमनवाप्तं पराप्न-पात् M. 9,209. श्रनवाप्तचत्ःपत्ता असि Çik. 25,1.

- प्रत्यव wiedererlangen Çıçup. 5,40.
- समव 1) auf Etwas stossen, antressen: मक्टक्र्यणं तत्र काञ्चनं सम्वादस्यय R. 4,44,71. 2) erlangen, gewinnen, auf sich laden, erleiden: तत्पालं समवाप्रयात् MBB. 2,866. R. 3,53,40. समवाप्राति ब्रव्सलोन्कम् Jiós. 1,212. विनाशं भर्तिर प्राप्ते न बेनां समवादयित R. 3,66,16. 2,67,7. स्नर्धार्यविनिर्मालं समवाप्य मक्षप्रम् 5,87,21. प्रकृषं समवापतुः MBB. 3,16595. न बेर्द् समवाप्रस्य 10449. नाधर्म समवाप्राति 5,7079. किचिब्रहुणैः समवाप्यते Katbás. 4,96. स्वस्त्राणि समवाप्रानि वया द्श च पञ्च AB6. 3,5.
- उद् hinaufreichen, erreichen ÇAT. Ba. 2,6,2,16. दिवं मर्त्य इव बा-क्रभ्यां नादापुः 13,5,4,14.23.
- उप zu Etwas gelangen TS. 6,6,11,5. एतन्मियुनमुपाप्नवानि ÇAT.BR. 11,3,2,1. उप क् तं काममाम्नाति 12,4,2,3. 9,3,13. ब्रह्मोपाप्नवानि TAITT. Up. 1,8. स्रत्रा स काम उपाप्तः ÇAT.BR. 6,2,2,10. 11,5,2,9. 4,3,2,13. AIT. BR. 2,16. desid. mit Etwas (instr.) Jmd zu gewinnen suchen: ब्राह्म-पाल्भिक्तेनोपटमित्र KAUG. 68. 140.
- परि 1) erreichen, gewinnen: क्ता वी प्रतः परि द्तं त श्राप RV. 1,76,1. TS. 7,3,1,4. ÇAT. BR. 2,1,4,8. 2) ein Ende machen, genug sein lassen: भीम पर्याप्तृहि MBB. 15,1073. part. पर्याप्त erfüllt, zum Abschluss gebracht, das volle Maass habend, ein hohes Maass erreichend, geräumig, vollständig, voll, hinreichend, genügend: कामान्य: कामपते मन्यमान:

hat) कतात्मनस्त् इक्व सर्वे प्रविलीयति कामाः ॥ Munp. Up. 3, 2, 2. शशीव पर्याप्तकलः Ragn. 6, 44. पर्याप्तचन्द्रेव शर् स्त्रियामा Кимаваз. 7,26. पर्याप्तप्-ष्पस्तवकावनम्रा ३,54. तस्य द्वाराणि सर्वाणि पर्याप्तानि वृक्ति च MBn. 18, 186. उरस्थपर्याप्तानेवेशभागा (लदमी:) Ragn. 18,46. नातिपर्याप्तमालद्य म-त्कुत्तेरस्य भाजनम् 15, 18. यज्ञाः पर्याप्तद्त्तिणाः (häufiger स्राप्तद् °) 17,17. स्र-पर्याप्तं तर्स्माकं बलम् — पर्याप्तं त्विर्मेतेषां बलम् Вилс. 1, 10. सुपर्याप्तं कारपंद्रकुमात्मनः м. ७,७६. पर्याप्ता मे बेरा खेष पदक् कुर्रि दृष्टवान् мвн. 3,13505. पर्याप्तभागा M. 3,40. Jagn. 3,250. पर्याप्तमेताबद्धतिहर्गनदर्शनम् R. 5,25,20. 81,24.42. 2,38,10. पर्वाप्त: परिकासा उपनेतावत treibe den Scherz nicht weiter N. (Bopp) 11, 8. hinreichend, mit dem dat.: प्रप त्रे-वर्षिकं भक्तं पर्वाप्तं भृत्यवृत्तये M. 11, 7. Die Ergänzung geht im comp. voran: मर्हेन्द्रोपकार्यपातिन विक्रममिहिमा Vika. 11,11. einer Handlung (dat. oder loc. des nom. act. oder auch inf.) oder einer Person (gen.) gewachsen: त्वं व्हि तस्य विनाशाय पर्याप्त: MBH. 3, 13541. तदात्मभरूणे — पर्याप्ता महिधाना च भर्णाय स. 2,31,23. म्रह्मार्य मुपर्याप्ता वधायास्य 6, 36,21. लमेवैकः कार्यस्य परिसाधने । पर्याप्तः 5,35,46. 3,42,26. म्रन्यात् न पर्याप्ता गरुडा वायुना सङ् 3,44,30. 35,25. 51,7. Ragh. 10,26. Prab. 75,2. रामस्य — न पर्याप्ती R. 1,21,13. 3,28,15. 42,25. MBn. 3,11281. पर्याप्तम् nach Wunsch AK. 2,9,57. H. 1505. Gleichbedeutend mit पर्याप्त ist पर्याप्तवल् Ragn. 16,28: पीडामपर्याप्तवतीव सांज्म्. — desid. 1) verlangen, fordern, wünschen: दाता - ऋणम् - परीटमेत्केन कृतना M. 8, 161. सा बर्ह्सने परीटसाते MBn. 3,11368. पुत्रजन्म परीटसन् 1,5515. वधं कृष्ता परीप्सत्ती सेनावारूस्य ४,५०३. प्रियमेव परीप्सत्ते २,५६३. — २) या erhalten wünschen, in Acht nehmen, schützen: न पेपन्दकम् - प्राणा-निरू परीप्सता MBs. 3, 17327. ट्यायामेन परीप्सस्त्र जीवितम् 4, 2246. न परीप्सत्ति ये भावी वध्यतानाम् ४८०. वैकर्तनं परीप्सत्ता गन्धर्वान्सम-वाकिर्न् 3,14899. तान्प्रीप्सम्ब 4,1008. — 3) Jmd beizukommen suchen, auf Jind oder Etwas lauern, nachstellen: स मया सागरावर्ते दृष्ट श्रासी-त्पर्राप्सता MBn. 3,632. परीप्समानः पार्धानं। कलापात्न धनुषि च + 1454. पञ्चशताञ्कूरान् — परीप्सनानः 15723.

- संपर्रि zusammensassen, zusammennehmen: संपर्धाप्य मूलानि च प्रा-सानि च KAUG. 90.
- प्र 1) erreichen, treffen; an einen Ort gelangen; auf Jmd oder Etwas stossen, Jmd oder Etwas antreffen: मेमं प्रापंत् (वधः) AV. 1,30,1. 17, 1,28.29. नैनं प्राप्नांत श्पर्यः 4,9,4. 11,1,22. 12,3,45. येट्राट्रमनं प्राप्नांति ÇAT. Ba. 8,6,2,13. यो वा अनुचानो उन्ह्रेतनान्प्राप्नुपात् 4,5,6,5. 5,5,2,1. 12,5,2,9. fgg. यता वांचा निवर्तते । अप्राप्य (sc. अह्म) मनसा सह । आन्द्रं अह्मणा विद्वान् प्राप्ताः Up. 2,9. प्राप क्राचार्यकुलम् Кылы. Up. 4,9, 1. अप्राप्य देवान् Ban. Âa. Up. 8,9,1. यया मक्राक्ट्रं प्राप्य तिसं लोष्टं विनश्यति M. 11,263. द्राह्णामटवीं प्राप्य N. 12,7. आग्रमं तमकं प्राप्य Daç. 2,3. प्राप्य गोद्विशें नदीम् R. 3,22,37. 1,1,86. 2,54,8. Çik. 55,21. Ragh. 1,48. Vid. 81.186.223.246.282. अप्राप्य नदीं पर्वतः diesseits des Flusses ein Berg P. 3,4,20, Sch. प्राप्य भरतम् R. 1,77,20. Vid. 23. 100. Bhaṭṭ. 5,96. दिशः प्राप्त sie flohen nach allen Richtungen Bhaṭṭ. 13,70. तेन स च कोद्वीरी पर्यापक्के मधुरः सत्रसो ऽपि न। प्राप्यते (angetroffen, gefunden wird) क्रि ठांकी. 3,142. प्रापि मक्राग्नारिः Bhaṭṭ. 13,106. 2) erlangen, gewinnen, sich zuziehen, auf sich laden, erleiden; act.: प्रापेषे सर्वा